54 औद्योगिक विकास

(उठाए गए कदम, उपलब्धियाँ एवं विकास की संभावनाएँ)

अभ्यास

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 536 का अवलोकन कीजिए।

❖ **अतिलघुउत्तरीय प्रश्न**

अतिलघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 536 व 537 का अवलोकन कीजिए।

❖ **लघुउत्तरीय प्रश्न**

1. औद्योगिक विकास की परिभाषा दीजिए।

उ०– औद्योगिक विकास की परिभाषा- किसी देश में, **''कृषि का यंत्रीकरण, कुटीर तथा लघु उद्योगों की नींव पर बनी मशीनों तथा विनिर्माण उद्योगों की शृंखला का दूसरा नाम औद्योगिक विकास है।''** दूसरे शब्दों में, **''मानवीय संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधनों के समन्वय से राष्ट्र में जो औद्योगिकरण का विशाल भवन खड़ा होता है, उसे औद्योगिक विकास कहा जाता है।''**

2. औद्योगिक विकास की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उ०– औद्योगिक विकास की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) औद्योगिक विकास के लिए विविध उद्योगों का विकास और विस्तार किया जाता है।

(ii) उद्योगों के विकास के साथ-साथ देश के सर्वांगीण आर्थिक विकास का लक्ष्य रखा जाता है।

(iii) औद्योगिक विकास का उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था में समग्र परिवर्तन करना होता है।

3. भारत में औद्योगिक विकास के मार्ग की तीन बाधाओं का विवरण दीजिए।

उ०– भारत में औद्योगिक विकास के मार्ग की तीन बाधाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) पूँजी की कमी– औद्योगिक विकास के लिए उद्योगों में भारी पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है। अधिकतर भारतीय निर्धन हैं, जो अधिक बचत नहीं कर पाते। धनी और पूँजीपति लोग जोखिम वाले उद्योगों के बजाय सुरक्षित निवेश के कामों; जैसे– संपत्ति, व्यापार या सरकारी बाँड में पूँजी निवेश करना अधिक पसंद करते हैं।

(ii) विदेशी शासन– भारत लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजी शासन से त्रस्त रहा। अंग्रेज शासक भारतीय उद्योगों के विकास

के प्रति उदासीन रहे। उन्होंने भारतीय कुटीर एवं घरेलू उद्योग-धंधों को नष्ट करके भारत को कच्चा माल निर्यात करने वाली मंडी बना दिया। विदेशी शासन के कारण ही भारतीय उद्योग तीव्र विकास नहीं कर सके।

(iii) कुशल श्रमिकों का अभाव– उद्योगों का तीव्र विकास मजदूरों की कुशलता पर भी निर्भर होता है, किंतु भारत में कुशल श्रमिकों का अभाव है। यहाँ के अधिकतर श्रमिक कृषि कार्यों से जुड़े हैं। कृषि क्षेत्र में बेरोजगारी हो जाने के कारण वे उद्योगों की ओर रुख करते हैं। ऐसे श्रमिक उद्योगों में काम करने लायक भी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करते। निष्कर्षत: उद्योगों में अकुशल श्रमिकों की अधिकता होने के कारण औद्योगिक विकास की गति मंद ही रहती है।

4. भारत में औद्योगिक विकास हेतु उठाए गए तीन कदमों पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारत में औद्योगिक विकास हेतु उठाए गए तीन कदम निम्नलिखित हैं–

(i) उद्योगों के लिए औद्योगिक बैंकों, वित्तीय संस्थाओं तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों से वित्तीय सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।

(ii) उद्योगों के विकास हेतु अनेक औद्योगिक बस्तियाँ, विशेष आर्थिक क्षेत्र तथा औद्योगिक केंद्रों की स्थापना की गई है।

(iii) सरकार द्वारा उद्योगों को तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराने के लिए 'केंद्रीय लघु उद्योग विकास संगठन' बनाया गया है।

5. भारत में औद्योगिक विकास की तीन प्रमुख उपलब्धियाँ क्या रही हैं?

उ०– भारत में औद्योगिक विकास की तीन प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं–

(i) भारत ने औद्योगिक विकास हेतु एक सुदृढ़ तथा आधुनिकतम अवसंरचना का ढाँचा खड़ा कर लिया है।

(ii) अवसंरचना के इस सुदृढ़ ढाँचे पर कभी भी औद्योगिक इकाइयों का जाल फैलाया जा सकता है।

(iii) भारत में 'सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय' को दृष्टिगत करते हुए, सार्वजनिक उपक्रमों की एक शृंखला खड़ी करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

6. उदारवादी औद्योगिक नीति क्या है?

उ०– उदारीकरण– आर्थिक दृष्टि से 'उदारीकरण' एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें देश के तीव्र आर्थिक विकास हेतु नियंत्रण, कोटा, लाइसेंस, विभिन्न शुल्क, उपकर आदि प्रशासकीय रुकावटों को कम किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ''औद्योगिक क्षेत्र की विभिन्न नीतियों, जैसे– कराधान, आयात-निर्यात, श्रम आदि में परिवर्तनों के द्वारा उत्पादन, वितरण, निवेश पर अपने प्रतिबंधों के नियमों में ढील देने की नीति को 'उदारीकरण' कहा जाता है।''

❖ विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. औद्योगिक विकास का अर्थ और उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– औद्योगिक विकास का अर्थ– औद्योगिक विकास दीर्घकाल तक चलने वाली वह सतत प्रक्रिया है, जो राष्ट्र की आर्थिक संपन्नता के माध्यम से दिखाई पड़ती है। दूसरे शब्दों में, "मानवीय संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों के समन्वय से राष्ट्र में जो औद्योगीकरण का विशाल भवन खड़ा होता है, उसे औद्योगिक विकास कहा जाता है।" औद्योगिक विकास एक तुलनात्मक शब्द है। पश्चिमी देशों में यह अधिक हुआ है, जबकि पूर्व के राष्ट्र अभी पिछड़े हुए है। जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अणु बम का विनाश सहकर भी जो सुदृढ़ औद्योगिक ढाँचा तैयार किया है, वह उसके औद्योगिक विकास का प्रतीक बन गया है। भारत भी औद्योगिक विकास की दौड़ में भाग ले रहा है। अत: उसे भी लक्ष्य तक पहुँचने में अधिक देर नहीं लगेगी।

औद्योगिक विकास के लक्षण या विशेषताएँ– औद्योगिक विकास को उसकी निम्न विशेषताओं की कसौटी पर जाँचा-परखा जा सकता है–

(i) औद्योगिक विकास के लिए विविध उद्योगों का विकास तथा विस्तार किया जाता है।

(ii) उद्योगों के विकास के साथ-साथ देश के सर्वांगीण आर्थिक विकास का लक्ष्य रखा जाता है।

(iii) औद्योगिक विकास का उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था में समग्र परिवर्तन करना होता है।

(iv) पूँजी के गहन तथा व्यापक प्रयोग हेतु देश में पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि के प्रयास किए जाते हैं।

(v) औद्योगिक विकास के द्वारा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु क्षेत्रीय विषमताओं को दूर करना होता है।

(vi) राष्ट्रीय उद्योगों के विकास तथा अपने माल बेचने के लिए नए-नए बाजारों की खोज करनी पड़ती है।

(vii) राष्ट्र में औद्योगिक स्थिरता आना, सामाजिक न्याय तथा सुरक्षा की स्थापना होना और नागरिकों के जीवन-स्तर में गुणात्मक सुधार आना औद्योगिक विकास की विशेषताएँ हैं।

(viii) राष्ट्र के आंतरिक तथा विदेशी व्यापार में वृद्धि होना, औद्योगिक विकास की एक प्रमुख विशेषता है।

2. भारत में औद्योगिक विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं का वर्णन कीजिए।

उ०– भारत के औद्योगिक विकास के मार्ग में आने वाली बाधाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) पूँजी की कमी– औद्योगिक विकास के लिए उद्योगों में भारी पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है। अधिकतर भारतीय निर्धन हैं, जो अधिक बचत नहीं कर पाते। धनी और पूँजीपति लोग जोखिम वाले उद्योगों के बजाय सुरक्षित निवेश के कामों; जैसे– संपत्ति, व्यापार या सरकारी बाँड में पूँजी निवेश करना अधिक पसंद करते हैं।

(ii) विदेशी शासन– भारत लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजी शासन से त्रस्त रहा। अंग्रेज शासक भारतीय उद्योगों के विकास के प्रति उदासीन रहे। उन्होंने भारतीय कुटीर एवं घरेलू उद्योग-धंधों को नष्ट करके भारत को कच्चा माल निर्यात करने वाली मंडी बना दिया। विदेशी शासन के कारण ही भारतीय उद्योग तीव्र विकास नहीं कर सके।

(iii) कुशल श्रमिकों का अभाव– उद्योगों का तीव्र विकास मजदूरों की कुशलता पर भी निर्भर होता है, किंतु भारत में कुशल श्रमिकों का अभाव है। यहाँ के अधिकतर श्रमिक कृषि कार्यों से जुड़े हैं। कृषि क्षेत्र में बेरोजगारी हो जाने के कारण वे उद्योगों की ओर रुख करते हैं। ऐसे श्रमिक उद्योगों में काम करने लायक भी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करते। निष्कर्षत: उद्योगों में अकुशल श्रमिकों की अधिकता होने के कारण औद्योगिक विकास की गति मंद ही रहती है।

(iv) अकुशल उद्यम और प्रबंधन– भारत में योग्य उद्यमियों तथा कुशल प्रबंधकों की बहुत कमी है। इसके अतिरिक्त शिक्षित व कुशल नागरिक कोई व्यवसाय या उद्योग लगाने के बजाय नौकरी करना अधिक पसंद करते हैं।

(v) आधारभूत उद्योगों की कमी– विदेशी शासन के कारण स्वतंत्रता के समय तक भारत में भारी तथा आधारभूत उद्योगों का अभाव था। मशीनों, औजारों, रासायनिक सामानों तथा इस्पात के पुर्जों आदि के लिए उद्योगों को विदेशों पर आश्रित रहना पड़ता था। इसी कारण भारतीय उद्योगों का विकास मंद गति से हुआ।

(vi) ऊर्जा के सस्ते साधनों का अभाव– उद्योगों के तीव्र विकास हेतु सस्ते शक्ति के साधनों की आवश्यकता होती है। अच्छी किस्म के कोयले तथा खनिज तेलों के लिए भारत को विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। विद्युत उत्पादन की पर्याप्त क्षमता का विकास भी देश अभी तक नहीं कर पाया है।

(vii) वित्तीय संगठनों का अभाव– उद्योगों के तीव्र विकास हेतु उन्हें कम ब्याज वाले दीर्घकालीन ऋणों की आवश्कता होती है किंतु भारत में औद्योगिक विकास बैंकों और पर्याप्त सुदृढ़ वित्तीय संगठनों की कमी रही है।

(viii) कच्चे माल का अभाव– भारत में उद्योगों के लिए कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त उसकी किस्म भी घटिया होती है। घटिया कच्चे माल के कारण वस्तुएँ भी घटिया किस्म की होती हैं। कपास, पटसन तथा टिन, सीसा, गंधक, जस्ता आदि खनिजों की कमी देश के औद्योगीकरण में बाधक है।

(ix) अविकसित परिवहन तथा संचार तंत्र– कच्चा माल कारखानों तक लाने तथा तैयार माल को बाजारों तक भेजने के लिए पर्याप्त और विकसित परिवहन प्रणाली तथा संचार तंत्र की आवश्यकता होती है। किंतु भारत में इनके साधनों का पर्याप्त विकास नहीं होने के कारण औद्योगिक विकास की गति मंद ही रही।

(x) सामाजिक कारण– भारतीय समाज की कई कुरीतियाँ तथा मान्यताएँ भी औद्योगिक विकास में बाधक रही हैं; जैसे–

(क) सामाजिक कुरीतियों तथा रीति-रिवाजों में लोगों को अपनी आय का एक अच्छा अंश खर्च करना पड़ता है, इसी कारण वे बचत नहीं कर पाते।

(ख) जनसंख्या वृद्धि तथा निर्धनता भी उनकी बचत करने की क्षमता को समाप्त कर देती है।

(ग) जाति-व्यवस्था तथा अंधविश्वासी होने के कारण भारतीय श्रमिक गतिशील नहीं होते, अतः उनकी कार्यकुशलता में कोई वृद्धि नहीं हो पाती।

3. भारत में औद्योगिक विकास हेतु उठाए गए कदमों का विस्तृत विवरण दीजिए।

उ०– भारत में औद्योगिक विकास हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदम– भारत में औद्योगिक विकास हेतु सरकार की ओर से निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं–

(i) उद्योगों के लिए औद्योगिक बैंकों, वित्तीय संस्थाओं तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों से वित्तीय सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।

(ii) उद्योगों के विकास हेतु अनेक औद्योगिक बस्तियाँ, विशेष आर्थिक क्षेत्र तथा औद्योगिक केंद्रों की स्थापना की गई है।

(iii) सरकार द्वारा उद्योगों को तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराने के लिए 'केंद्रीय लघु उद्योग विकास संगठन' बनाया गया है।

(iv) सरकार ने औद्योगिक लाइसेंस व्यवस्था को सुगम तथा उदार बना दिया है।

(v) सरकार ने औद्योगिक विकास को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण संस्थान तथा अनुसंधानशालाओं की स्थापना की है।

(vi) सरकार ने अपनी राजकोषीय नीति औद्योगिक विकास के अनुकूल बनाई है।

(vii) सरकार ने उद्योगों के लिए औद्योगिकी तकनीकी सुलभ कराने हेतु राजकोषीय वित्तीय सुविधाएँ देने की व्यवस्था कर दी है।

(viii) सरकार ने उद्योगों के लिए नवीनतम तकनीकी तथा उनके आधुनिकीकरण की समुचित व्यवस्थाएँ की हैं।

(ix) उद्योगों में उत्पादन लागतों को न्यूनतम रखने में सरकार द्वारा मदद दी गई है।

(x) सरकार ने औद्योगिक विकास को गतिशील बनाने के लिए 'प्रौद्योगिक सुधार कोष' तथा 'पूँजी आधुनिकीकरण कोष' की स्थापना की है।

(xi) भारत सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण करके औद्योगिक विकास के लिए अद्वितीय कार्य किया है।

(xii) भारतीय अर्थव्यवस्था को स्वतंत्र विदेशी पूँजी प्रवाह, विदेशी तकनीकी तथा स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता से जोड़ दिए जाने के कारण आर्थिक विकास में तेजी आई है।

4. भारत में औद्योगिक विकास की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारत के औद्योगिक विकास की उपलब्धियाँ– भारत के औद्योगिक विकास की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नवत् रही हैं–

(i) भारत ने औद्योगिक विकास हेतु एक सुदृढ़ तथा आधुनिकतम अवसंरचना का ढाँचा खड़ा कर लिया है।

(ii) अवसंरचना के इस सुदृढ़ ढाँचे पर कभी भी औद्योगिक इकाइयों का जाल फैलाया जा सकता है।

(iii) भारत में 'सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय' को दृष्टिगत करते हुए, सार्वजनिक उपक्रमों की एक शृंखला खड़ी करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

(iv) भारत में खनन, लोहा-इस्पात, इंजीनियरिंग तथा रासायनिक उर्वरक बनाने की इकाइयाँ खड़ी कर ली गई हैं।

(v) भारत ने विविध औद्योगिक क्षेत्रों में आत्म-निर्भरता बढ़ाकर पूँजीगत वस्तुओं का आयात कम किया है।

(vi) भारत की प्रमुख उपलब्धि परंपरागत सामानों के स्थान पर तैयार तथा नवीन वस्तुओं का निर्यात करना है।

(vii) भारत ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की स्थापना कर तकनीकी प्रबंधन की सुविधाएँ जुटा ली हैं।

(viii) भारत में औद्योगीकरण का स्तर ऊँचा उठने से उद्योगों में विविधता झलकने लगी है।

(ix) भारत एक सुदृढ़ विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था का निर्माण करने में सक्षम हो गया है।

5. भारत में औद्योगिक विकास की भावी संभावनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत कीजिए।

उ०– भारत में औद्योगिक विकास की संभावनाएँ– समूचा आर्थिक और औद्योगिक ढाँचा भावी विकास की संभावनाओं पर टिका हुआ है। भारत में औद्योगिक विकास की निम्नलिखित संभावनाएँ भविष्य के गर्भ में छिपी हुई हैं–

(i) भारत के प्राकृतिक संसाधन, कृषि तथा प्राथमिक उद्योग, जो उत्पाद उपलब्ध करा रहे हैं, उनके प्रयोग से भारत में औद्योगिक विकास की भावी संभावनाएँ विद्यमान हैं।

(ii) भारत की 125 करोड़ जनसंख्या में से अनेक कुशल, दक्ष तथा प्रतिभाशाली तकनीशियन निकल रहे हैं। वे भारत के औद्योगिक विकास की संभावनाओं को निश्चित कर देते हैं।

(iii) भारत ने कुटीर तथा लघु उद्योगों को विकास के शिखर तक ले जाकर, भावी औद्योगिक विकास की संभावनाओं को बलवती बना दिया है।

(iv) भारत में नए आविष्कार, प्रशिक्षण केंद्र तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, कुशल एवं श्रेष्ठ श्रम उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे औद्योगिक विकास की संभावनाओं में वृद्धि हो रही है।

(v) भारत ने परंपरागत तथा गैर-परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों का विकास करके, आर्थिक विकास की संभावनाओं के कपाट ही खोल दिए हैं।

(vi) भारतीय उद्योगों ने अंतर्राष्ट्रीय मानकों को दृष्टिगत रखते हुए अपने उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाकर तथा उत्पादन के तरीकों का आधुनिकीकरण करके औद्योगिक विकास की संभावनाओं को मजबूत बना दिया है।

(vii) भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने मेक इन इंडिया, मेड इन इंडिया, जीरो डिफेक्ट आदि का नारा देकर, भारतीय औद्योगिक विकास की संभावनाओं को और भी बल प्रदान कर दिया है।

6. नई औद्योगिक नीति में औद्योगिक विकास हेतु किए गए मुख्य प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उ०– नई औद्योगिक नीति– नई औद्योगिक नीति की घोषणा भारत सरकार द्वारा 24 जुलाई, 1991 में की गई। भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तनों के प्रावधानों से युक्त इस नीति को 'उदारवादी औद्योगिक नीति' बनाने का प्रयास किया गया। इसके दो प्रमुख उद्देश्य थे– (क) भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था को अनावश्यक नियंत्रणों से मुक्त कराना तथा (ख) देश के उत्पादन को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विदेशी उत्पादन से प्रतिस्पर्धा योग्य बनाने के लिए औद्योगिक कार्यकुशलता में पर्याप्त वृद्धि करना।

औद्योगिक विकास की गति तीव्र करने तथा देश को आर्थिक संकट से उबारने के लिए इस नीति में किए गए उपाय निम्न हैं–

(i) नियंत्रणों से मुक्ति देकर उदारता की नीति अपनाना अर्थात उदारीकरण करना।

(ii) निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने हेतु सार्वजनिक क्षेत्र की व्यापकता को कम करना अर्थात निजीकरण को बढ़ावा।

(iii) विदेशी व्यापार से प्रतिबंधों को हटाकर विदेशी निवेश को बढ़ावा देना अर्थात वैश्वीकरण।

(iv) उत्पादन की उन्नत प्रविधियों को अपनाना।

(v) सरकारी घाटे को कम करना।

(vi) कृषि व्यवसाय को आधुनिक बनाना।

(vii) मौद्रिक, व्यापार तथा राजकोषीय नीतियों में व्यापक फेरबदल करना।

संक्षेप में नई आर्थिक नीति के केवल तीन उपाय ही प्रमुख हैं– उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण

❖ **प्रोजेक्ट कार्य**

अध्यापक की सहायता से विद्यार्थी स्वयं करें।